सुविचार

‘अगर आप अपनी सोच बदल सकते हैं,
तो आप अपना जीवन बदल सकते हैं।’
—— विलियम जेम्स

एक सकारात्मक शुरुआत

कालचक्र

खबर नहीं, हकीकत

2 फ़रवरी 2026 | अंक 1, वर्ष 1 | https://kalchakra-coral.vercel.app/

Budget 2026-27

The Indian Union budget 2026-2027, presented on February 1,2026, by finance Minister Nirmala sitharaman, focuses on infrastructure, manufacturing, and procedural tax reforms to drive the vision of Viksit bharat 2047.

Key highlights from Budget:-

Infrastructure and connectivity=12.2lakh crore.
MSMEs and Growth 10,000 crore
Defence ₹7.85 lakh Cr
Health care ₹1.07 lakh crore
Education ₹1.39 lakh Cr
AI and tech ₹40,000Cr
Agriculture ₹1.63lakh Cr
Space ₹13,705.63 Cr
Climate ₹20,000 Cr
Home affairs 2.55 lakh Cr
Urban and rural development ₹1.94lakh Cr

मध्यप्रदेश आर्ट फेस्टिवल 4.0: कला, साधना और संवेदना का संगम

इंदौर के गांधी हॉल में आयोजित मध्यप्रदेश आर्ट फेस्टिवल 4.0 में देशभर के कलाकारों ने चित्रकला, मेटल आर्ट, मिक्स मीडिया और लाइव आर्ट के ज़रिए रचनात्मकता की अद्भुत झलक पेश की।
(पेज 4 पर जारी...)

भारत– ई. यू. की सम्पन्न हुई ऐतिहासिक साझेदारी

भारत और यूरोप ने इसे “मदर ऑफ ऑल डील” कहा।

- प्रसून कुशवाहा

वर्ष 2004 से भारत यूरोपीय यूनियन के साथ व्यावसायिक साझेदारी की बात कर रहा था, जो आख़िरकार 27 जनवरी 2026 को पूरी हुई।
इससे पहले भारत और यूरोपीय यूनियन के डिप्लोमैट्स की बातचीत वर्ष 2024 में आठवीं बार सम्पन्न हुई थी।
ध्यान आकर्षित करने वाली बात यह है कि जिस साझेदारी को करने में इतना मोल-भाव हो रहा था, वह अचानक कैसे पूरी हो गई।
इसमें कोई संशय नहीं है कि जब से अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने ग्रीनलैंड पर कब्ज़े की बात की, जो कि यूरोपीय यूनियन का हिस्सा है, तब से हालात बदलने लगे। ग्रीनलैंड पर कब्ज़े की बात ही नहीं, बल्कि यूरोप के कई देशों पर दस प्रतिशत (10%) टैरिफ लगाने का भी ऐलान किया गया था, जिसे बाद में वापस ले लिया गया।

अमेरिका की दादागिरी, भारत का फ़ायदा

अब जब अमेरिका अपने आसपास के सभी देशों को अपना अधीन समझने लगा, तब से यूरोपीय यूनियन के देशों ने अपने कदम भारत की ओर बढ़ाए। इसी का नतीजा है यह “फ्री ट्रेड एग्रीमेंट”।
इस साझेदारी से दोनों पक्षों–या कहें भारत और यूरोपीय यूनियन के देशों–के बीच होने वाले व्यापार पर कर न के बराबर या बहुत कम हो जाएगा। इससे भारत में यूरोपीय यूनियन के सामान सस्ते हो जाएंगे और यूरोप में भारत के सामान भी सस्ते मिलेंगे।
हालाँकि, भारत सरकार ने इस साझेदारी में डेयरी इंडस्ट्री को बाहर ही रखा है।
भारत सरकार का अनुमान है कि दोनों के बीच व्यापार 77 बिलियन डॉलर से बढ़कर 200 बिलियन डॉलर तक पहुँच जाएगा।

यूजीसी के नए नियमों पर रोक: क्या है पूरा मामला

- महक

देश की उच्च शिक्षा से जुड़े विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के नए नियम विवादों में हैं। मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा। अदालत ने 13 जनवरी 2026 से लागू हुए “Promotion of Equity in Higher Education Institutions Regulations, 2026” पर अगले आदेश तक रोक लगा दी। कोर्ट का कहना है कि नियमों के कुछ प्रावधान अस्पष्ट हैं और दुरुपयोग की संभावना है। अगली सुनवाई 19 मार्च को होगी; तब तक 2012 के पुराने नियम ही लागू रहेंगे।
UGC देश की उच्च शिक्षा की सबसे बड़ी नियामक संस्था है। यह विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के संचालन, डिग्री मान्यता, पढ़ाई-परीक्षा और सरकारी अनुदान से जुड़े नियम तय करती है। इसके फैसलों का असर करोड़ों छात्रों, शिक्षकों और संस्थानों पर पड़ता है।
2012 के नियमों का उद्देश्य जाति आधारित भेदभाव रोकना था। इनमें शिकायत निवारण की व्यवस्था थी, लेकिन निगरानी और दंड का स्पष्ट प्रावधान नहीं होने से प्रभाव सीमित रहा।
2026 के नए नियमों में भेदभाव की परिभाषा अब जाति, धर्म, लिंग, जन्मस्थान, दिव्यांगता और क्षेत्र तक बढ़ा दी गई है। हर संस्थान में Equal Opportunity Center, अलग इक्विटी कमेटी, 24×7 हेल्पलाइन और ऑनलाइन शिकायत प्रणाली अनिवार्य है। उल्लंघन होने पर फंडिंग रोकने या मान्यता रद्द करने का प्रावधान भी है।
विरोधक कहते हैं कि ठोस सबूत की अनिवार्यता स्पष्ट नहीं, आरोपी पर खुद को निर्दोष साबित करने का दबाव और जनरल कैटेगरी के भेदभाव पर स्थिति अस्पष्ट है। अफवाहें फैलीं कि बिना जांच कार्रवाई होगी, जबकि नियमों में समिति और प्रक्रिया का उल्लेख है।
नेताओं के बयान भी चर्चा में रहे। कांग्रेस नेता कपिल सिब्बल ने कहा, “बिना सलाह के फैसले लेना सरकार की आदत है, किसी वर्ग को नजरअंदाज करना देश के भविष्य के लिए नुकसानदायक हो सकता है।”
BJP विधायक पंकज सिंह ने सुप्रीम कोर्ट की रोक को “स्वागत योग्य फैसला” बताया। गिरिराज सिंह ने कहा, “प्रधानमंत्री मोदी ने कभी किसी के साथ भेदभाव नहीं किया।”
सुप्रीम कोर्ट की अगली सुनवाई तय करेगी कि नियम संशोधित होंगे या नए सिरे से लागू होंगे।

एक नई पहल - आओ जानें हर ज़िले के कलाकारों की अद्भुत दुनिया

फर्रुखाबाद की पहचान — ब्लॉक प्रिंटिंग

गंगा के तट के किनारे कपड़ों पर नक्काशी जरी जरदोजी और ब्लॉक प्रिंटिंग की विरासत

- कशिश

हमारे देश में सदियों से रंगों से गहरा प्रेम रहा है।
त्योहारों में रंगोली बनाना, शादियों में हल्दी की रस्म, और कपड़ों पर रंगों से छपाई करना–ये सब हमारी सांस्कृतिक परंपराओं का हिस्सा रहे हैं।
इसी परंपरा को आज भी जीवित रखे हुए है उत्तर प्रदेश का जनपद फर्रुखाबाद, जहाँ के कारीगर अपने हाथों के हुनर, मेहनत और रंगों की अद्भुत समझ से ब्लॉक प्रिंटिंग की कला को संजोए हुए हैं।
यहाँ के कारीगरों ने वस्त्र छपाई की इस पारंपरिक कला–टेक्सटाइल प्रिंटिंग–को आज तक सहेज कर रखा है।
यह कला लगभग 18वीं शताब्दी से चली आ रही है। यहाँ के हुनरमंद कारीगर पीढ़ियों से कपड़ों पर छपाई का काम करते आ रहे हैं। शीशम, आम या आबनूस की लकड़ी पर हाथ से नक्काशी कर सुंदर लकड़ी के ब्लॉक तैयार किए जाते हैं।
छपाई के लिए स्क्रीन प्रिंटिंग की पारंपरिक तकनीक (लकड़ी के ठप्पों से छपाई) का उपयोग किया जाता है।
यहाँ का प्रसिद्ध डिज़ाइन ‘ट्री ऑफ लाइफ’ (जीवन का वृक्ष) विश्व स्तर पर अपनी पहचान रखता है।
सूती और रेशमी कपड़ों पर की जाने वाली यह छपाई साड़ियाँ, पर्दे, बेड कवर और स्कार्फ जैसे उत्पादों के लिए विशेष रूप से जानी जाती है।
आज फर्रुखाबाद में इस कला से 500 से अधिक कारीगर सीधे जुड़े हुए हैं, और लगभग 15,000 से ज़्यादा लोगों को इससे रोज़गार मिल रहा है।
फर्रुखाबाद टेक्सटाइल प्रिंटिंग को 2013 में GI टैग भी प्राप्त हुआ।
यहाँ वस्त्र छपाई के साथ-साथ जरी-ज़रदोज़ी का काम भी बड़े पैमाने पर होता है। आधुनिक तकनीक के साथ नई-नई खूबसूरत डिज़ाइन तैयार की जा रही हैं।
ज़रदोज़ी कढ़ाई फारसी मूल की एक शानदार धातु-कढ़ाई कला है, जिसे मुग़लों का संरक्षण प्राप्त रहा।
यहाँ के कारीगर ‘अड्डा’ (लकड़ी के फ्रेम) पर बैठकर सुई (आरी), रेशमी धागों, सोने-चाँदी के तारों (जरी), सितारों और मोतियों की मदद से लहंगे, दुपट्टे, साड़ियाँ और अन्य परिधानों पर शाही नक्काशी करते हैं।
यहाँ बने लहंगे और साड़ियाँ बॉलीवुड से लेकर विदेशों तक पसंद की जाती हैं।
फर्रुखाबाद के कलाकारों और कारीगरों की बात ही कुछ और है।
हर जनपद में आपको ऐसे ही अद्भुत कौशल और कलाएँ देखने को मिलेंगी–बस ज़रूरत है उन्हें जानने और पहचान देने की।

IS WOMEN SAFE IN INDIA?

- Abhishek Kumar Dwivedi

India is celebrating the 77th year of Republic Day this year and the tag of the fourth-largest economy in the world, along with the vision of Viksit Bharat in 2047.

But a century ago, in this society, women were treated as homemakers or meant to fulfill sexual needs. Society deprived women of education; women couldn't speak, and women were expected to live only inside the home. After long years of slavery, women tackled these issues, and nowadays Indian women make us proud by working in every sector of the country, like defence, politics, banks, hospitals, sports, and civil services.

But still, it only looks good from the top. The data does not match reality, because in India crimes against women–rape, violence, molestation, assault, and harassment, etc.–are increasing day by day. It happens anytime, anywhere: day or night, home or workplace, city, village, or metropolitan city. Any place in the country. This time caste, religion, age, and colour do not matter.

According to the National Crime Records Bureau (NCRB), data shows that 4,48,211 crimes against women were reported in 2023, and 29,670 were rape cases. The 2024 data has not been declared yet. It indicates that, on average, 86 rape cases were reported every day in India in 2021. Even in Madhya Pradesh, a latest claim by NDTV state that 7 Dalit women were raped every day in 2025. In 2023, 7,202 rape cases were registered in MP. This figure was officially confirmed by Chief Minister Dr. Mohan Yadav in the state assembly of MP. In 2024, there were 7,294 cases, or approximately 20 cases registered every day.

Here the fact is that 29 Members of Parliament from Madhya Pradesh cannot speak even 10 seconds on this matter. But the question still arises that "data does not match reality," because most of the cases in India are not registered due to red-tapism, slander, fear of what society will say, people making fun of victims, and lack of judicial awareness.

A few years back, everyone knows about the Nirbhaya case–a 23-year-old woman raped and murdered. It took 7 years and 3 months to solve this case because of our blind and slow judiciary system. The 2024 rape and murder case of a 31-year-old woman doctor of RG Kar Medical College and Hospital in West Bengal is another example. At that time, the nation should stand for that woman. People protested in every corner of the country for justice, but even after more than one year, the nation and her family have not received justice. Even in 2025, some students were protesting on Raksha Bandhan outside RG Kar Medical College, but police lathi-charged the students.

इमेज सोर्स: AI जनरेटेड

In October 2025, in the rape and murder case of a second-year medical student in Durgapur, West Bengal, Chief Minister Mamata Banerjee made remarks placing some responsibility on girls for being out late at night. She compared the incident to similar crimes in other states like Manipur and Uttar Pradesh, stating they are also condemnable. Our India, the so-called "Vishwaguru," wants to host the 2030 Commonwealth Games and the 2036 Summer Olympics. Ironically, in this country, Madhya Pradesh minister Kailash Vijayvargiya commented on two Australian women cricketers who were molested in Indore, saying they "should learn a lesson" from the incident and be careful in the future. He stated that players should inform local administration or security personnel before leaving their hotel to go to a café or anywhere else. These are the words of an Indian politician who has more than 42 years of experience in Indian politics.

In the Unnao rape case, the victim's family was killed and molested, and the victim was raped by many, but the culprit was given bail because he was an MLA from the current government.

The Indian government launches new schemes day by day for women, like Beti Bachao Beti Padhao, Sukanya Samriddhi Yojana, Ladli Behna Yojana, Griha Laxmi Yojana, Mahila Samman, Your Daughter Our Daughter, etc. But these have become tools during election time for vote banks, because the government does not even guarantee safety and security to women in an effective manner.

Even in recent Bihar elections, the running government launched many welfare schemes for women, like Mahila Rojgar Yojana, where 10,000 is given to women and 1,000 is given monthly to the youth population. Opposition parties promised government jobs to all homes in Bihar, while some leaders promised to change constituency names and talked about migration, unemployment, abscondment, and industrialization. But not even a single party spoke about women's safety and security from the big stage in their speeches and interviews.

Data shows crimes against women in Bihar: 2020–15,359; 2021–17,950; 2022–20,222, according to NCRB. But political parties focus only on freebies. This is not only the fault of the government, because people give votes based on freebies. Parents never ask politicians during election campaigns to ensure the safety of their daughters.

During ancient times and in mythology books, women were treated as goddesses in our society. Even nowadays, the nation feels proud when women win Olympic medals, and recently Indian women won the Cricket World Cup at the global stage. But still, Indian women cannot walk on roads at midnight freely. India has the vision of Viksit Bharat in 2047, but in my opinion, India will become vikshit when a girl can walk on the road or work in an office at 2:00 a.m., and her mother and father can sleep freely at home, and the girl never feels fear for her safety.

गेंदबाजों पर बढ़ता दबाव

- ज्योतिष

आधुनिक क्रिकेट जगत में जितनी तवज्जो बल्लेबाज़ों को दी जाती है, उतनी शायद ही किसी गेंदबाज़ को अहमियत दी जाती है। गेंदबाज़ों के लिए अब पिचों में कुछ बचा नहीं है। सब कुछ बल्लेबाज़ों के हक़ में है। पिचों का निर्माण मुख्य रूप से रन-फेस्ट को बढ़ावा देने के लिए किया जा रहा है।

आज के समय में बल्लेबाज़ों के पास वीडियो विश्लेषण, खेल डेटा विश्लेषण जैसे साधन हैं, लेकिन वहीं गेंदबाज़ों के पास कम विकल्प हैं।

पावर प्ले और क्षेत्ररक्षण प्रतिबंध जैसे नियमों से गेंदबाज़ों पर गहरा असर होता है। सिर्फ़ दर्शकों को लुभाने के लिए बल्लेबाज़ों के हक़ में पिच बनाना, गेंदबाज़ों के साथ नाइंसाफ़ी है।

हाल के दिनों में जितनी भी लीग हैं, उनके अलग-अलग नियम बनाए जा रहे हैं, जो बल्लेबाज़ों के पक्ष में अधिक लागू होते हैं, जिससे गेंदबाज़ों की मुश्किल बढ़ती है।

आज के समय में लोगों को सिर्फ़ छक्के-चौके देखने में ही आनंद आता है, वहीं अगर लगातार तीन-चार विकेट गिर जाएँ, तो उतनी खुशी नहीं होती।

लगातार पाँच बार साइमन टॉफेल को "आईसीसी अंपायर ऑफ द ईयर" चुना गया। ऑस्ट्रेलियाई पूर्व क्रिकेट अंपायर साइमन टॉफेल ने टी-20 क्रिकेट में गेंदबाज़ों से चार ओवर की जगह पाँच ओवर कराने की अपील की। उनका मानना है कि ऐसा करने से बल्ले और गेंद के बीच संतुलन होगा।

रात में खेलने की क्या ज़रूरत है?

रविचंद्र अश्विन
भारतीय पूर्व गेंदबाज

"अपने शो Ash Ki Baat में रविचंद्र अश्विन ने पूछा"–

इन मैचों को रात में ही खेलने की क्या ज़रूरत है?

ओस की समस्या के हवाले देते हुए उन्होंने इस बात पर चिंता जताई कि अगर किसी भारतीय गेंदबाज़ का हालिया दो मैचों में प्रदर्शन खराब रहा है और वह मैच में ज़्यादा रन दे देता है, तो उसका करियर समाप्त हो जाएगा।

आपकी कीमती प्रतिक्रिया

सच की सीधी पहुँच, बस एक स्कैन दूर।

सच की एक झलक

मैं यह भी भूल गयी, मुझे क्या पसंद हैं और क्या नहीं।

- कशिश

एक औरत, जिसके बारे में कोई बात नहीं करता और करना भी नहीं चाहता है। क्योंकि वह करती ही क्या है– हमारी मानसिकता के हिसाब से बस अपनी आधी से ज़्यादा ज़िंदगी रसोईघर में बिता देती है, अपने पति और बच्चों की पसंद का खाना बनाते-बनाते। पर जिस रसोई में उसकी जिन्दगी बितती है उस में कभी उस कि पसंद का खाना नहीं बनता। "क्योंकि वह एक औरत है।"
ऐसे ही किसी ने एक औरत से पूछा, "तुम्हें क्या पसंद है?" पहले तो वह बड़े उदास स्वर में बोली, "मुझे याद ही नहीं कि मुझे क्या पसंद है।"फिर अचानक बोली, "वो... मुझे ना चटपटा साग बहुत पसंद हैं
जैसे एक पल को उसके चेहरे पर खुशी झलक आई हो, सिर्फ़ सोचने भर से। फिर नीचे मुँह करके बोली, "बिट्टू और उसके बाबूजी को पसंद नहीं, इसलिए बनाती ही नहीं। उन्होंने पूछा–"तो अपने लिए क्यों नहीं बनती?" वह बड़े गंभीर स्वर में बोली, "अब क्या औरतों की पसंद का खाना बनेगा घर में" एक औरत ही कुछ नहीं कहती, उसने इसे अपना भाग्य मानकर करती हैं। या यह सोच लेती है कि औरतों को चूल्हा चौंका ही करना है।इसलिए कोई और भी कुछ कहने से झिझकता रहता है। पर हमें समझना चाहिए। एक औरत अपने परिवार की वजह से अपने सारे सपने, ज़रूरतें और आराम भी भूल जाती है, पर बदले में उसे कुछ नहीं मिलता।
हमें यह भी नहीं पता कि खाना बनता कैसे है, खाना बनाने में लगता क्या है। हमें कुछ नहीं पता। अगर खाने में थोड़ा-सा नमक ज़्यादा हो जाता है, जैसे उस औरत पर पहाड़ ही टूट जाता है–
"तुम्हें खाना बनाना नहीं आता क्या, जो इतना नमक कर दिया?" "ले जाओ यह खाना, मुझे नहीं खाना।"
हम उसकी मेहनत नहीं देखते। वह खाना बनाते समय गैस की तपन में पसीने से नहाती हुई खाना बनाती है हमारे लिए। इसलिए तारीफ़ करना सीखो। अगर खाने में थोड़ा नमक ज़्यादा हो, तो भी तारीफ़ कर दो, क्योंकि खाना खराब नहीं होता, "खाना अच्छा या बहुत अच्छा होता है"। इसलिए उसका शुक्रिया अदा करो, कि वह इतना सब सहकर भी हमेशा तुम्हें मुस्कुराते हुए खाना परोसती है।

हॉबीज खत्म होती जनरेशन

- मल्लिका सिंह

मोबाइल फोन, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने हमारी ज़िंदगी को आसान तो बनाया है, लेकिन इसके साथ लोगों की रुचियाँ और शौक धीरे-धीरे खत्म होते जा रहें हैं। पहले के समय में बच्चे और युवा अपने शौक को पूरे दिल से जीते थे–कोई गाना गाता था, कोई चित्र बनाता था, कोई खेल-कूद में भाग लेता था। इन हॉबीज़ के ज़रिए लोगों को खुशी मिलती थी, तनाव कम होता था और उनका व्यक्तित्व निखरता था। लेकिन आज की पीढ़ी का अधिकतर समय मोबाइल स्क्रीन के सामने बीतता है। वीडियो देखना, रील्स स्क्रॉल करना और गेम खेलना उनकी दिनचर्या का हिस्सा बन गया है।
मैं दूसरों को क्या सलाह देती, इस चीज़ का शिकार मैं खुद बन चुकी हूँ। मुझे बचपन से गाना गाने का शौक था, पर पता नहीं कब धीरे-धीरे यह आदत छूटती गई। शायद मोबाइल और इंटरनेट के कारण मेरा ध्यान बदल गया। पहले मैं लोगों के बीच गाना गाया करती थी, बिना किसी झिझक अपनी आवाज़ सुनाती थी। समय के साथ मेरी हॉबी खत्म होने लगी और उसकी जगह सोशल मीडिया ने ले ली। अब मेरा समय गाने की प्रैक्टिस में नहीं, बल्कि वीडियो देखने और मोबाइल चलाने में बीतने लगा। दिन का ज़्यादातर समय स्क्रीन के सामने निकल जाता है। पहले जहाँ खेलना, गाना और कुछ नया सीखना अच्छा लगता था, अब वैसा उत्साह नहीं बचा। मन जल्दी थक जाता है और किसी काम में लंबे समय तक ध्यान नहीं लगता। कभी-कभी पुराने दिन याद आते हैं, जब मैं खुलकर गाना गाया करती थी और लोग मेरी सराहना करते थे। अब ऐसा लगता है कि मैंने अपनी एक अच्छी आदत खो दी है।
इसलिए ज़रूरी है कि हम अपने शौक को पूरी तरह खत्म न होने दें। मोबाइल और सोशल मीडिया ज़रूरी हो सकते हैं, लेकिन हमें अपनी रुचियों पर भी ध्यान देना चाहिए, क्योंकि हॉबीज़ केवल समय बिताने का साधन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास का आधार हैं। जब व्यक्ति अपनी रुचियों को समय देता है, तो उसका मन शांत रहता है, आत्मविश्वास बढ़ता है और जीवन में संतुलन बना रहता है।
मलीका सिंह |

हमारे जाने से किसी को फर्क नहीं पड़ता

- हेमंत बम्होरिया

दुनिया की चकाचौंध और अपनी व्यस्त ज़िंदगी में हम अक्सर इस भ्रम का शिकार हो जाते हैं कि हम इस दुनिया के केंद्र हैं। हमें लगता है कि हमारे बिना काम रुक जाएगा, लोग दुखी रहेंगे या हमारे जाने के बाद दुनिया वैसी नहीं रहेगी जैसी आज है। लेकिन हक़ीक़त इससे बिल्कुल अलग है। दुनिया तो निरंतर चलने वाली सच्चाई है। यह दुनिया किसी के लिए नहीं रुकती। इतिहास गवाह है कि बड़े-बड़े सम्राट, दार्शनिक और क्रांतिकारी आए और चले गए। उनके जाने पर कुछ समय के लिए हलचल ज़रूर हुई, लेकिन समय की धारा ने सब कुछ सामान्य कर दिया। आपके जाने के बाद आपके स्थान पर कोई और आ जाएगा और वह आपका स्थान ले लेगा। आपके परिवार वालों की ज़िंदगी भी समय के साथ परिवर्तित हो जाएगी।
अक्सर हमारा अहंकार हमें यह मानने पर मजबूर करता है कि हम अपरिहार्य हैं। हम हर बात को दिल से लगा लेते हैं, यह सोचकर कि "लोग क्या कहेंगे" या "मेरे बिना उनका क्या होगा।" जब हम इस विचार को स्वीकार कर लेते हैं कि हमारे होने या न होने से ब्रह्मांड को कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, तो हमारे कंधों से एक बहुत बड़ा बोझ उतर जाता है।
इसे सच में छिपी है 'आज़ादी' यह सुनकर शुरुआत में दुख हो सकता है कि "किसी को फ़र्क़ नहीं पड़ता," लेकिन गहराई से सोचने पर इसमें एक अद्भुत स्वतंत्रता है–
दबाव से मुक्ति: आपको अब किसी को प्रभावित करने के लिए जीने की ज़रूरत नहीं है।
गलतियों का डर खत्म: जब आप जानते हैं कि आपकी असफलताएँ भी कुछ समय बाद भुला दी जाएँगी, तो आप जोखिम लेने से नहीं डरते।
वर्तमान में जीना: यह अहसास आपको सिखाता है कि आप दूसरों के लिए नहीं, बल्कि अपने खुद के अनुभवों के लिए जिएँ।
गहरा प्रेम बनाम सामाजिक प्रभाव यहाँ एक बारीक अंतर समझना ज़रूरी है। आपके जाने से पूरी दुनिया को फ़र्क़ नहीं पड़ेगा, लेकिन आपके क़रीबियों के दिल में एक खालीपन ज़रूर आएगा। हालाँकि, वह खालीपन भी समय के साथ यादों में बदल जाता है। प्रकृति का नियम ही यही है कि 'शोक' की भी एक एक्सपायरी डेट होती है। इंसान भूलने के लिए ही बना है, ताकि वह आगे बढ़ सके।
"किसी को फ़र्क़ नहीं पड़ता" यह वाक्य आपको निराश करने के लिए नहीं, बल्कि आपको जगाने के लिए है। यह आपको याद दिलाता है कि आपकी ज़िंदगी की फ़िल्म के असली दर्शक आप ख़ुद हैं। अपनी खुशी की चाबी दूसरों के हाथों में न दें। अपनी शर्तों पर जिएँ, क्योंकि अंत में आप केवल अपनी यादों और अपने अनुभवों के साथ विदा होंगे।
याद रखें–आप इस विशाल ब्रह्मांड की एक छोटी-सी बूंद हैं। अपनी यात्रा का आनंद लें, क्योंकि लहरें तो आपके जाने के बाद भी किनारे से टकराती रहेंगी। इसलिए आप स्वयं पर ध्यान दें, दूसरों पर नहीं। अपने जीवन का चयन स्वयं करें।

कृष्णार्जुन युद्ध - माखनलाल चतुर्वेदी

- अंकित कुशवाहा

भारतीय कवि माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित नाटक कृष्णार्जुन युद्ध में हमें गंधर्व राजा चित्रसेन भगवान कृष्ण के डर से भागते हुवे बताए गए है। चित्रसेन मदद के लिए सबसे पहले इंद्रसभा जाता हैं, जहाँ उन्हें निराशा प्राप्त होता है। तत्पश्चात वे पाण्डवों के पास जाते हैं परंतु युधिष्ठिर के अनुपस्थिति के कारण उन्हें वहां भी निराशा ही हाथ लगता है। कही से मदद न मिलने के कारण चित्रसेन अपनी पत्नी चित्रांगी व बच्चों के साथ एक नदी तट पर बैठ जाता है, जहाँ उन्हें देवी सुभद्रा से अभय दान का वचन मिल जाता है, जिसके कारण भगवान कृष्ण और अर्जुन के बीच युद्ध की परिस्थिति बन जाती है।

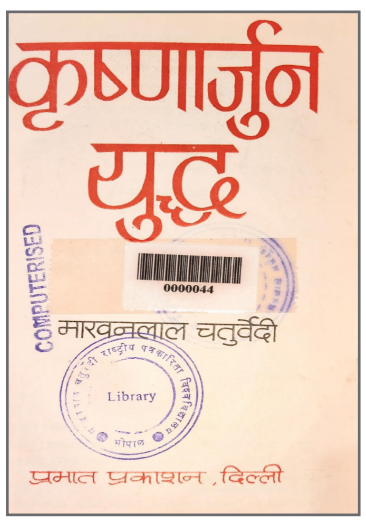

उद्देश्य :-
तत्कालीन समय में भारतीय संस्कृत को तोड़-मोड़कर प्रस्तुत कर रहे पारसी नाटकों को मुहतोड़ जवाब देना तथा अपनी संस्कृति व अस्मिता को बचाना।

120 बहादुर - अहीरों का बलिदान

- शैलेश यादव

आजादी के बाद भारत ने 1954 में चीन से पंचशील संधि की थी, जो प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू और झोउ एनलाई के बीच हुई। इस समझौते की अवधि 1954 से 1960 तक रखी गई थी। इसके बाद चीन ने भारतीय सीमाओं में घुसपैठ शुरू की, जिसका परिणाम 1962 का भारत-चीन युद्ध और रेज़ांग ला की ऐतिहासिक लड़ाई रहा–इसी पृष्ठभूमि पर फरहान अख्तर की फिल्म "120 बहादुर" आधारित है। 120 बहादुर 1962 के युद्ध में रेज़ांग ला की लड़ाई पर आधारित एक गंभीर वॉर-ड्रामा है। फिल्म 13 कुमाऊँ रेजिमेंट के उन 120 सैनिकों की कहानी कहती है, जिन्होंने विषम परिस्थितियों में आख़िरी

दम तक मोर्चा संभाले रखा। मेजर शैतान सिंह भाटी के नेतृत्व और सैनिकों के कर्तव्यबोध व बलिदान को फिल्म प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है। यह उल्लेख जरूरी है कि भारतीय सेना में यादव समाज के सैनिकों का योगदान ऐतिहासिक रूप से साहस और बलिदान से जुड़ा रहा है। हालांकि फिल्म को लेकर यादव समाज के कुछ लोगों में असंतोष भी दिखा, जिनका मानना है कि उनके योगदान को उतनी स्पष्टता से नहीं उभारा गया, जितनी अपेक्षा थी।
तकनीकी रूप से फिल्म मजबूत है–लद्दाख की भौगोलिक कठिनाइयाँ और युद्ध दृश्य प्रभावशाली हैं, हालांकि पटकथा की भावनात्मक गहराई में थोड़ी कमी महसूस होती है। कुल मिलाकर, 120 बहादुर एक सम्मानजनक श्रद्धांजलि है, जो बहादुरी को सलाम करती है और प्रतिनिधित्व पर चर्चा की गुंजाइश छोड़ती है।

वर्दी

सारे कपड़े फीके पड़ जाते हैं,
जब वो वर्दी में आता है।
हाय! जब वो वेरेट कैप लगा कर आए।
तो सारे ताज धरे रह जाते हैं।
मैं तो उसकी परेड कि दीवानी हूं,
तो दुनिया किस को ही भाए।
वो मारता होगा जंग में, दुश्मनों को बंदूकों से,
मैं तो उसकी मुस्कान से ही घायल हो जाती हूं।
वो हर पल मुझ से दूर है देश के लिए,
उसका यही जज्बा,
मुझे उस के और करीब बनाता है।
तू वीर है मैदान का,
पर तू प्यार मेरा है।
तेरे प्राण देश के लिए,
पर तू मेरा है।
वो कुछ ना कहे,
बस "जय हिंद" कह दे।
मुझे वही अच्छा लगता है

- कशिश

एक पत्र हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के नाम।

प्रिय भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, सुखदेव, राजगुरु, महात्मा गाँधी और मेरे सभी स्वतंत्रता सेनानियों,

नमस्कार। मैं आज आपके सामने सिर झुका कर खड़ा हूँ – न किसी राजनीतिक दल की ओर से, न किसी विचारधारा के समर्थन में, बस एक साधारण नागरिक के रूप में। आप लोगों ने जिस आज़ादी, आदर्श और आत्मसम्मान के लिए अपनी जान दी, वे मूल्य आज मेरे देश में खोते-खोते नज़र आते हैं।

इमेज सोर्स: AI जनरेटेड

हमारी लोकतांत्रिक संस्थाएँ ढह नहीं रहीं, पर उन पर छाया पड़ चुकी है – अपने आप को सबसे ऊपर रख देने वाली आवाज़ों, झूठी शान, और हाथ में पड़ी सत्ता से। जनता की छोटी-छोटी आवाज़ें दब जाती हैं; ईमानदारी, सहानुभूति और करुणा जैसे गुण पीछे छूट गए हैं। हम उस भारत की ओर जा रहे हैं जिसकी कल्पना आप सबने की थी – समानता, न्याय और सच्चाई से भरा देश। पर रास्ता मुश्किल हो गया है।
मैं आपसे निवेदन करता हूँ: लौट कर आ जाइए – नहीं तो कम से कम अपनी शिक्षाएँ हमें याद दिलाइए। हमें सिखाइए कि किस तरह विनम्रता, सत्य और सेवा के लिए खड़ा रहा जाए। हमें दिखाइए कि कैसे विचारों में भिन्नता होने पर भी सम्मान और संवाद बना रहे। हमें याद दिलाइए कि देश में शक्ति का अर्थ जनता की भलाई है, किसी एक के लाभ के लिये ताकत नहीं।
हम जानते हैं कि आप लौट कर नहीं आ सकते – पर आपकी याद और आदर्श ज़िंदा रहकर ही हमें सुधार का रास्ता दिखा सकते हैं। हमें साहस दीजिए कि हम भ्रष्टाचार, भेदभाव और झूठ के खिलाफ खड़े हों; हमें दया दीजिए कि हम अपने कमजोरों का साथ दें; हमें विवेक दीजिए कि हम अपने वचनों और कर्मों में ईमानदार रहें।

इस पत्र के साथ मेरी सिर्फ एक गुज़ारिश है – आपकी जज़्बा, आपकी निष्ठा और आपका त्याग हममें जगाइए, ताकि हम अपने देश को उस मिठास और शान पर वापस ले आएँ, जिसका आपने सपना देखा था।
आपका श्रद्धापूर्वक,
शैलेश यादव
(एक चिंतित नागरिक)

मध्यप्रदेश आर्ट फेस्टिवल 4.0, इंदौर

– सृष्टि सक्सेना

कलास्तम्भ नामक ऑर्गनाइज़ेशन द्वारा आयोजित यह महोत्सव 24, 25 और 26 जनवरी को कलाकारों एवं दर्शकों–दोनों के बीच हर्ष का विषय रहा। यह आर्ट एग्ज़िबिशन लंबे कॉरिडोर में केवल कला का प्रदर्शन नहीं करता, अपितु कलाकार की वर्षों की मेहनत, साधना और मनोबल से निर्मित भावनाओं को भी सामने लाता है। इंदौर शहर के गांधी हॉल में आयोजित यह उत्सव सभी विधाओं के अलग-अलग मंझे हुए साधकों को एक ही छत के नीचे लाने का बेहद उम्दा प्रयास रहा।

अलग-अलग क्षेत्रों से आए कलाकार

•**श्रीमती तन्वी गुप्ता**, ब्यावरा – अपनी पेंटिंग सीरीज़ "ब्रीथ" के माध्यम से महिलाओं पर आधारित कला को प्रस्तुत करती हुईं।
•**श्री गौरव साध एवं रेखा प्रजापति जी** – चारकोल आर्ट में अपनी विशिष्ट कलाकृतियों के साथ।
•**जयेश वर्मा** – वेस्ट मटेरियल से निर्मित एक जीवंत आकृति को दर्शाया।
•**मयंक श्रीवंश** – मेटल आर्टिस्ट, जिन्होंने धातु से विशाल आकृति का निर्माण कर मेटल को एक नई पहचान दी।
•**एस. हाशमी** – नेल आर्टिस्ट, जिनकी कलाकृतियाँ बड़े-बड़े राष्ट्रीय प्रदर्शनों की शोभा बनीं; नेल आर्ट में वर्ल्ड रिकॉर्ड भी इनके नाम दर्ज है।
•**डॉ. जेनिशा जैन** – अपने पेशे के साथ-साथ एब्स्ट्रैक्ट आर्ट के माध्यम से कला को जीवंत बनाए रखा।
•**निशिता जैन (वाराणसी)** – मिक्स मीडियम से ऐसी प्रभावशाली कला प्रस्तुत की, जो देखने में बेहद साधारण वस्तुओं से निर्मित थी।
•**जयेश सोनी** – ऑयल पेंटिंग के माध्यम से राम भक्त हनुमान की एक जीवंत कृति प्रस्तुत की।
उपरोक्त वे नाम हैं जो किसी प्रकार संकलित हो सके, जबकि ऐसे अनेक कलाकार अपनी-अपनी कला के माध्यम से वहाँ उपस्थित थे।
रंगोली के माध्यम से केशव शर्मा (केशव आर्ट्स) ने प्रेमानंद जी की आकृति को स्थान दिया।
कलाकारों के विविध माध्यम
एब्स्ट्रैक्ट आर्ट, मिक्स मीडियम, पेंटिंग एग्ज़िबिशन, स्वनिर्मित स्टॉल के माध्यम से अनेक विधाएँ– रेज़िन आर्ट, हैंडमेड साड़ी, फेस पेंटिंग, क्रोशे आर्ट, लिप्पन आर्ट–प्रदर्शित की गईं।
संगीत के क्षेत्र से पुणे से आए कलाकार अपने वाद्य यंत्रों के साथ उपस्थित थे। पॉटरी के विविध कलाकार लाइव डेमो के माध्यम से अपनी कला लोगों तक पहुँचा रहे थे।
बच्चों के उत्साहवर्धन हेतु इंटर-कॉलेज पेंटिंग प्रतियोगिता एवं मेहंदी प्रतियोगिता आयोजित की गई। अलग-अलग शहरों से आए समूहों में मुख्य रूप से तनु मेहंदी आर्ट, खुजनेर के विद्यार्थियों ने कड़ा मुकाबला प्रस्तुत किया।
पूजा कुशवाह, प्रियल सक्सेना, समृद्धि सक्सेना, राहुल कुशवाह आदि ने मेहंदी को केवल आम जीविका नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना और उभरते आर्ट फॉर्म के रूप में प्रस्तुत किया।
लगभग 45 कलाकारों के बीच आयोजित इस प्रतियोगिता में राहुल कुशवाह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

कला का महत्व

जब हम आम लोग ऐसे कार्यक्रम देखते हैं, तब समझ पाते हैं कि दुनिया कितने विविध रंगों से बनी है और अभी बहुत कुछ ऐसा है जिसे इन दो आँखों से देखना बाकी है।
विविध राज्यों से आए वरिष्ठ कलाकार
•**रागवैष्णवी (वैष्णवी शर्मा)**, आंध्र प्रदेश – अपने पिता की रचनाओं को चेहरा और आवाज़ देकर लोगों के दिलों में अपनी पहचान बनाने वाली कलाकार, जिन्हें "कैकई संवाद" जैसे प्रख्यात नाटकों से जाना जाता है।
•इंदौर से डॉक्टरों के एक समूह की भागीदारी भी चर्चा का विषय रही, जहाँ अपने पेशे से अलग समय निकालकर उन्होंने कला के माध्यम से नए कलाकारों को प्रेरित किया।
टॉक शो के माध्यम से अनेक वर्कशॉप और संवाद के अवसर मिले। इंदौर शहर के कई इन्फ्लुएंसर और विभिन्न विधाओं के कलाकार उपस्थित रहे।

तन्वी गुप्ता – 'ब्रीथ' सीरीज़
महिलाओं के जीवन में अनेक परिवर्तन आते हैं, जिन्हें उन्हें उम्र के हर दौर के साथ अपनाना पड़ता है। पहले एक लड़की होना, फिर विवाह के बाद किसी के घर की बहू बनकर जिम्मेदारियाँ निभाना, उसके बाद माँ बनना और अंततः दादी-नानी के रूप में परिवार की मजबूत नींव बनना।
उम्र के साथ उनका महत्व तो बढ़ता है, लेकिन संघर्ष और कर्तव्य जीवन के अंत तक चलता रहता है।
इन्हीं वास्तविक प्रसंगों के माध्यम से इस सीरीज़ को रचकर उन्होंने हज़ारों महिलाओं को आवाज़ दी है।
जयेश वर्मा – वेस्ट मटेरियल से कलाकृति
गणेश प्रतिमा एक काँच के बॉक्स में दूर से सामान्य प्रतीत होती थी, लेकिन पास जाकर देखने पर एहसास हुआ कि जो वस्तुएँ हम अनुपयोगी समझकर फेंक देते हैं, वही किसी कलाकार के लिए कितनी महत्वपूर्ण और अनोखी हो सकती हैं।
ऐसे कलाकार हमें हर परिस्थिति में सकारात्मक सोच बनाए रखने की प्रेरणा देते हैं।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर कार्यक्रम बेहद सफल रहा। लोग कला के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़ते दिखे। अनुभव अत्यंत सकारात्मक रहा, हालाँकि कुछ परेशानियाँ भी कलाकारों द्वारा बताई गईं–जैसे मैनेजमेंट में कुछ कमियाँ, विभिन्न विधाओं को एक साथ रखने से उनकी विशेषता का कम हो जाना, वार्म लाइट के स्थान पर तेज़ सफ़ेद रोशनी का उपयोग, और कलाकारों को स्वयं अपनी आवश्यकताओं का प्रबंध करना पड़ना।
कुछ कलाकारों की प्रस्तुति शैली पुरानी होने के कारण उन्हें अपेक्षित प्रतिक्रिया नहीं मिल सकी।
मैनेजमेंट के लिए सुझाव
•कला विधाओं के अनुसार अलग-अलग स्पेस सुनिश्चित किया जाए।
•लाइटिंग और आवश्यक सुविधाएँ आधिकारिक रूप से तय हों।
•परिणामों में योग्यता और अनुभव को प्राथमिकता दी जाए, तथा निर्णायक मंडल में उस क्षेत्र के विशेषज्ञ हों।

सार

अपनी रोज़मर्रा की जीविका से अलग, एक बार कलाकारों की आँखों से दुनिया को देखना चाहिए। तब महसूस होता है कि हम कितना सुखी हो सकते हैं–बस एक प्रयास की ज़रूरत है।